शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 28-11-2020, वर्ग - BA-III

सीजर्स संकट के कारण - प्रारंभ में 'मुद्रा-स्फीति' को सीजर्स संकट का कारण बताया। मौरिस डॉब (Maurice Dobb) के अनुसार, सीजर्स संकट का प्रमुख कारण व्यापारिक सिण्डीकेटों के निर्माण द्वारा उद्योगों को प्राप्त एकाधिकार की स्थिति था। बेकोव (Baykov) की राय में सीजर्स संकट औद्योगिक उत्पादन में कमी तथा कृषि पदार्थों की प्रचुरता के कारण उत्पन्न हुआ था। वास्तव में सीजर्स संकट विभिन्न कारणों का सम्मिलित परिणाम था। ये कारण निम्न प्रकार थे —

(1) ग्रामीण बाजार का संकुचन :- 1922 के मध्य से कृषि-मूल्यों में निरन्तर गिरावट के परिणामस्वरूप किसानों की क्रयशक्ति कम हो गई। परिणामतः ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक वस्तुओं की मांग घट गई अर्थात ग्रामीण बाजार संकुचित हो गया।

(2) मुद्रा-स्फीति - 1922 में स्टेट बैंक ने सरकारी उद्योगों को उदार साख सहायता प्रदान की। परिणामतः उद्योगों में अति निवेश की स्थिति उत्पन्न हो गई, जिससे स्फीतिक प्रवृत्ति को

बल मिला (राजनीतिक प्रवृत्ति गृह-युद्ध के दौरान कृषि एवं उद्योग एवं औद्योगिक उत्पादन में भारी गिरावट तथा सरकारी व्यय में भारी वृद्धि के कारण पहले से ही विद्यमान थी)। अत्यधिक उत्पादन व्यय तथा अकुशल औद्योगिक प्रबन्ध के कारण भी विनिर्मित माल की कीमतों में भारी वृद्धि हुई।

③ औद्योगिक उत्पादन में कमी तथा कृषि-उत्पादन में वृद्धि — सीजर्स संकट का प्रमुख कारण औद्योगिक उत्पादन में गिरावट (1922 के प्रारम्भ में औद्योगिक मूल्यों में उपस्थित भारी गिरावट के फलस्वरूप) तथा कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि था। कृषि-पदार्थों का विदेशी बाजार समाप्त हो जाने से भी रूस में कृषि पदार्थों की प्रचुरता उत्पन्न हो गई थी।

④ उद्योगों की एकाधिकारी स्थिति ⇒ आपसी प्रतियोगिता के निवारण हेतु औद्योगिक प्रन्यासों ने व्यापारिक सिण्डीकेटों का गठन किया। सिण्डीकेटों के निर्माण से कृषकों की तुलना में उद्योगों को एकाधिकारी स्थिति प्राप्त हो गई। फलतः अपनी वस्तुओं के लिए उद्योग अनुकूल शर्तें पाने में सफल हुए।

(5) औद्योगिक वस्तुओं का संकट — स्टेट बैंक से प्राप्त उदार साख-सहायता के बल पर औद्योगिक प्रन्यास निर्मित माल का प्रवाह रोक करने में समर्थ थे। बाजार में वस्तुओं की क्षति घटाकर औद्योगिक प्रन्यास ऊँचा मूल्य प्राप्त करने में सफल हुए।

सीजर्स संकट के महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक परिणाम उपस्थित हुए। सामाजिक दृष्टि से इसने कृषक वर्ग में असन्तोष को जन्म दिया। आर्थिक दृष्टि से सीजर्स संकट के परिणामस्वरूप उद्योगों को अप्रत्याशित लाभ प्राप्त हुआ, किन्तु इससे ग्रामीण जनता का आर्थिक शोषण भी हुआ। फलतः कृषि की लागत पर उद्योगों का प्रसार हुआ। राजनीतिक दृष्टि से इसने किसानों और मजदूरों के मैत्री उद्योगों का प्रसार हुआ। राजनीतिक दृष्टि से इसने किसानों और मजदूरों के मैत्री सम्बन्ध को ~~प्रसार हुआ।~~ लिये खतरा उत्पन्न कर दिया, जो बोल्शेविक क्रांति का प्रमुख आधार था।

संकट निवारण हेतु उपाय :— अर्थव्यवस्था के

संतुलित विकास हेतु कृषि एवं उद्योग के बीच उपस्थित असामंजस्य का निवारण आवश्यक था। संकट-निवारण के लिए सरकार ने एक ओर कृषि मूल्यों में वृद्धि तथा औद्योगिक मूल्यों में ह्रास लाने का प्रयास किया। कृषि-मूल्यों को ऊपर उठने के लिए कृषि पदार्थों का निर्यात प्रोत्साहित किया गया तथा किसानों को अधिक उदार साख-सहायता उपलब्ध करायी गई। औद्योगिक मूल्यों में ह्रास लाने के उद्देश्य से तीन प्रकार के उपाय किए गए—

(i) उद्योग को दी जाने वाली बैंक साख की मात्रा सीमित कर दी गई है। फलतः औद्योगिक प्रभाग निर्मित माल का संचित स्टॉक बेचने के लिए बाध्य हुए, क्योंकि सीमित साख के कारण उनकी संग्रह-क्षमता घट गई थी।

(ii) औद्योगिक वस्तुओं का अधिकतम विक्रय-मूल्य निर्धारित करने के लिए, आन्तरिक व्यापार कमेटी गठित की गई।

(iii) विशेष परिस्थितियों में औद्योगिक मूल्य घटाने के उद्देश्य से नीचे मूल्यों पर औद्योगिक वस्तुओं का आयात किया गया।

औद्योगिक मूल्यों में गिरावट की नीति से कुछ उद्योगों को हानि होने की सम्भावना थी। इसके निवारण हेतु औद्योगिक लागतें घटाने का प्रयास किया गया। ऊँची औद्योगिक लागत का प्रमुख कारण प्रबन्धकीय व्यय की अधिकता था, जो स्वयं औद्योगिक संयंत्रों की क्षमता के अपूर्ण प्रयोग का परिणाम थी। प्रबंधकीय व्यय घटाने के उद्देश्य से अधिक कार्यक्षम संयन्त्रों तक उत्पादन को सीमित (केन्द्रित) रखने की नीति अपनायी गई। फलतः 1924 के अन्त तक औद्योगिक लागतों में 24 प्रतिशत की गिरावट आई। इस दौड़ान कृषि मूल्य तथा औद्योगिक मूल्यों के बीच असामंजस्य की स्थिति भी घटने लगी। सितम्बर 1923 में औद्योगिक मूल्यों एवं कृषि मूल्यों का अनुपात 3:1 की अधिकतम सीमा पर पहुँच गया था। अक्टूबर 1924 तक यह अनुपात बदलकर 1.5:1 हो गया। औद्योगिक मूल्यों में लगभग दो-तिहाई कमी उत्पादन लागत में गिरावट का परिणाम थी और एक-तिहाई कमी प्रन्यासों एवं सिण्डीकेटों के लाभों के गिरावट का परिणाम थी।